udaan2016 december_Layout 1 19-01-2017 16:51 Page 1

दीक्षांत
विशेषांक

उड़ान

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय का त्रैमासिक न्यूजलेटर

अक्टूबर–दिसम्बर–2016

udaan2016 december_Layout 1 19-01-2017 16:51 Page 2

कुलपति संदेश

हम सभी के लिए यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि विश्वविद्यालय ने अपना प्रथम दीक्षांत समारोह भव्य एवं गरिमामय ढंग से महामहिम कुलाधिपति की गरिमामय उपस्थिति में मनाया गया। इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रुप में माननीय उच्च शिक्षा मंत्री की उपस्थिति भी हमारे लिए सम्मान का विषय रही। साथ ही प्रदेश के अन्य विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का आगमन भी हुआ, जिससे हमारा दीक्षांत समारोह विशिष्ट बना। इस समारोह की झलक हमारे **'उड़ान'** के इस दीक्षांत विशेषांक में है। विश्वविद्यालय सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी यानी आइसीटी का बखूबी इस्तेमाल कर रहा है। हमारे यहां प्रवेश और परीक्षा से संबंधित कार्य तो ऑनलाइन होते ही हैं, साथ ही छात्रों से सम्पर्क हेतु फेसबुक, ट्विटर, यू–ट्यूब जैसे सोशल मीडिया का भी भरपूर इस्तेमाल होता है। हमारे सभी विभागों के अपने ब्लॉग है, जिसके माध्यम से छात्र और प्राध्यापक नवीन ज्ञान के बिन्दुओं पर संवाद स्थापित करते है।

विश्वविद्यालय के ई–पोर्टल पर अनेक विषयों की पाठ्य सामग्री अपलोड हो चुकी है। विश्वविद्यालय के वीडियो लैब में प्राध्यापकों के वीडियो लेक्चर रिकार्ड हो रहे है, जिनका प्रसारण 'स्वयंप्रभा' नामक शैक्षिक चैनल और स्वयं नामक चैनल पर होगा। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय शीघ्र ही प्रदेश के दस महाविद्यालयों में 'वर्चुअल क्लारूम' शुरू करने जा रहा है, जिसका पूरा लाभ छात्र उठा सकेंगे। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय का **'हैलो–हल्द्वानी'** नाम से सामुदायिक रेडियो केंद्र चल रहा है। हमें यह कहते हुए संतोष की अनुभूति हो रही है कि हम विश्वविद्यालय में छात्र केंद्रित शिक्षण–व्यवस्था का संचालन कर रहे है। सरकार की नई नीति के पश्चात परंपरागत विद्यार्थियों के साथ ही व्यक्तिगत परीक्षार्थियों का दायित्व भी मुक्त विश्वविद्यालय के उपर है। अब उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था में बहुत बड़े विकल्प के रुप में सामने आया है। आज विश्वविद्यालय के 77 पाठ्यक्रम चल रहे हैं, जिसमें बीए, बीएससी और बीकॉम जैसे पारंपरिक पाठ्यक्रम के अतिरिक्त प्रबंध अध्ययन, होटल मैनेजमेंट, पर्यटन, पत्रकारिता, समाज कार्य, आपदा प्रबंधन, ज्योग्राफिकल इंफॉमेशन सिस्टम, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा जैसे व्यावसायिक एवं रोजगारपरक पाठ्यक्रम भी हैं। इसके अतिरिक्त कौशल विकास से संबंधित कार्यक्रम भी चलाये जा रहे हैं।

आठ क्षेत्रीय केंद्रों तथा 236 अध्ययन केंद्रों के जरिए उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय ने प्रदेश भर में अपनी उपस्थिति दर्ज़ की है। प्रदेश का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो, जहां हमारी पहुंच ना हो। हमने पहाड़ के दुर्गम क्षेत्रों में अपनी विशेष उपस्थिति दर्ज़ की है। उत्तराखंड की पहली आईटी अकादमी की स्थापना उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में की गयी है। इन सारे घटनाक्रमों का दस्तावेज है 'उड़ान' का यह अंक। मुझे पूरा विश्वास है कि इस न्यूजलेटर से उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय केंद्र, अध्ययन केंद्र तथा शिक्षार्थियों के बीच बेहतर तालमेल विकसित होगा और हम सब एक कदम और आगे बढ़ेगे।

संरक्षकः प्रो. नागेश्वर राव, कुलपति
संपादक मंडलः प्रो. एचपी शुक्ल, डा. शशांक शुक्ला, श्री राजेन्द्र सिंह क्वीरा
परामर्श मंडलः प्रो. आरसी मिश्रा, प्रो. गिरजा पाण्डेय, प्रो. दुर्गेश पंत, प्रो. पीडी पंत।

प्रकाशक– कुलसचिव उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी।
मुद्रक– एयूएम पब्लिकेशन, रानीबाग।

udaan2016 december_Layout 1 19-01-2017 16:51 Page 3

संपादकीय

अत्यन्त हर्ष के साथ हम 'उड़ान' का दीक्षान्त विशेषांक प्रस्तुत कर रहें हैं। 7 नवम्बर 2016 को हमने अपना प्रथम दीक्षान्त समारोह आयोजित किया, जो न केवल विश्वविद्यालय के लिए अपितु हल्द्वानी नगर के लिए भी अविस्मरणीय ऐतिहासिक उपलब्धि थी। इस समारोह के सफल आयोजन का श्रेय विश्वविद्यालय के समस्त सदस्यों के अथक परिश्रम को है और वे निश्चित ही इसके लिए बधाई के पात्र हैं। दीक्षान्त समारोह केवल उपाधियाँ प्रदान करने का आयोजन नहीं है। इससे अधिक मूल्यवान इन उपाधिधारकों के लिए महामहिम कुलाधिपति का तैतरीय उपनिषद् के मन्त्रों के साथ दीक्षोपद.`श है, जो इन्हें सोद्देश्य सन्मार्ग पर गतिमान होने के लिए संकल्प प्रदान कर अभिप्रेरित करता है। इस अवसर पर दिया गया महामहिम का उद्.बा.`धन इनके भविष्य की जीवन दृष्टि पर विस्तार से प्रकाश डालता है। माननीया उच्च शिक्षा मन्त्री तथा माननीय कुलपति जी के सम्बोधन इसी भूमि को दृढ़ता प्रदान करते हैं। विश्वविद्यालय के स्वर्णपदक विजेता हमारे गौरव के पात्र हैं, अतः उन्हें इस अंक में विशेष स्थान दिया गया है।

इस वर्ष विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस 25 नवम्बर 2016 को विशेष धूमधाम से मनाया गया, जिसमें हमारे पूर्व कुलपति माननीय प्रोफेसर विनय कुमार पाठक मुख्य अतिथि रहे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय ने रंगीन चित्रों के साथ प्रारम्भ से अब तक की अपनी प्रगति आख्या का विमोचन भी किया, जिसमें विश्वविद्यालय के अनेक कीर्तिस्तम्भों का उल्लेख है।

8 दिसम्बर 2016 को विश्वविद्यालय में राज्य की प्रथम आइटी. अकादमी का शिलान्यास किया गया, जो निश्चय ही विश्वविद्यालय के इतिहास में नवीनतम कीर्तिस्तम्भ है। इस अवसर पर आयोजित समारोह में माननीया उच्च शिक्षा मन्त्री डॉ. इन्दिरा हृदयेश जी मुख्य अतिथि तथा प्रोफेसर पुष्पेश पन्त जी हमारे विशिष्ट अतिथि रहे। इन सभी गतिविधियों का उल्लेख इस अंक में समावेशित है, परन्तु दीक्षान्त के विशेष आकर्षण के फलस्वरूप उसे विस्तार से केन्द्रस्थ रखा गया है। आशा है हमारा प्रयास आपको पसन्द आयेगा।

दीक्षोपदेश

दीक्षोपदेश कराते कुलाधिपति

दीक्षांत समारोह का इतिहास वेद से लेकर इतिहास तक फैला हुआ है। प्राचीन शिक्षा–पद्धति के गुरुकुल में दीक्षा की समाप्ति के उपरांत गुरु द्वारा शिष्य को दीक्षोपदेश दिया जाता था। तैतरीय उपनिषद् के विद्यावल्लरी प्रकरण में दीक्षोपदेश का सन्देश निम्न प्रकार से वर्णित है।

अध्ययन की समाप्ति पर तुम लोगों के लिए मेरा यह उपदेश है। सत्य बोलो। धर्म का आचरण करो । स्वाध्याय में प्रमाद न करो। अपने आचार्य की सेवा में अभीष्ट धन अर्पित करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते हुए संतान परम्परा को उच्छिन्न न करो। सत्य में प्रमाद न करो। धर्म में प्रमाद न करो। कुशल व्यय में प्रमाद न करो। ऐश्वर्य कार्य में प्रमाद न करो। स्वाध्याय एवं प्रवचन में प्रमाद न करो। देव और पितरों के कार्य में प्रमाद न करो। माता को देवता समझो। पिता को देवता समझो। आचार्य को देवता समझो अतिथि को देवता समझो। जो निर्दोष कर्म हों उन्हें करो, दूसरे कर्मों को नहीं। जो हमारे सुन्दर आचार व कर्म हैं, उन्हीं का पालन करो, अन्य का नहीं। जो हमारे श्रेष्ठ विद्वान हों, उन्हें आसन देकर आश्वस्त करना चाहिए। श्रद्धा से देना चाहिए, अश्रद्धा से नहीं देना चाहिए। ऐश्वर्य के अनुसार देना चाहिए। संकोचपूर्वक देना चाहिए, सहृदयता से देना चाहिए। मैत्री भाव से देना चाहिए। यदि तुम्हें कर्म या आचरण के विषय में संदेह हो, तो समाज में जो विचारवान, कर्मठ, संवेदनशील, धर्मनिष्ठ तथा विद्वान हों वे उस विषय में जो व्यवस्था करें, वैसा ही तुम भी करो। इसी प्रकार जिन पर मिथ्या आरोप लगाये गए हों, उनके विषय में भी समाज में जो विचारवान, कर्मठ, संवेदनशील, धर्मनिष्ठ तथा अधिकारी विद्वान हों, वे जैसा उनके साथ व्यवहार करें, वैसा ही तुम भी करो। यह आदेश है। यह उपदेश है। यह वेद का रहस्य है। यह अनुशासन है। इस प्रकार उपासना करनी चाहिए आपका मार्ग मंगलमय हो।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कुलाधिपति आचार्य का उपदेश नैतिक–सामा.जिक तो है ही, उसमें जीवन के बहुतेरे सूत्र भी छिपे हुए हैं। यह धर्म–कर्म का सूत्र है यही दीक्षोपदेश है।

udaan2016 december_Layout 1 19-01-2017 16:51 Page 4

महामहिम कुलाधिपति डॉ. कृष्णकांत पॉल का दीक्षांत उद्‌बोधन

जीवन में शिक्षा का महत्व कभी कम नहीं होता। शिक्षा एक अंतहीन यात्रा के समान है, जो जीवन पर्यन्त चलती है। उमंग, उत्साह और ऊर्जा के स्त्रोतों से हमेशा जुड़े रहिए, चाहे वे व्यक्ति विशेष के रूप में हों या पुस्तकों के रूप में। अच्छी पुस्तकें पढ़ने की आदत लगातार बनाये रखिए। अच्छी पुस्तकें एकाग्रता और सकारात्मक सोच विकसित करने में मदद करती हैं। महापुरूषों के जीवन चरित्र का अध्ययन आत्मसुधार और व्यक्तित्व विकास में सहायक होता है। अच्छी पुस्तकें ज्ञान में वृद्धि के साथ ही व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन की समृद्धि में भी सहायक होती हैं।

अब आप एक नई दुनिया में कदम रखने जा रहे हैं। जीवन के लक्ष्यों को पूरा करने के दौरान कई चुनौतियां आयेंगी। उन सभी

प्रमुख अंश

सम्भावित चुनौतियों का सामना करना आसान होगा, यदि आप परिवार से प्राप्त संस्कार, स्वअर्जित ज्ञान, सच्चाई, स्वाभिमान, कर्तव्यबोध, आत्मसंयम और अनुशासन जैसे गुणों को अपनाने के साथ ही स्वयं को स्वस्थ भी रखेंगे। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ विचार आते हैं। शिक्षा का अर्थ मात्र शिक्षित होना नहीं है बल्कि शिक्षा जीवन जीने की सम्पूर्ण कला और सामाजिक परिवर्तन की कुँजी है। दुनिया के सभी महान विचारकों ने शिक्षा को ऐसा सबसे सशक्त माध्यम माना है जिसके बल पर दुनिया को बदला जा सकता है।

प्रिय छात्रों, मैं इस अवसर पर आपसे कुछ महत्वपूर्ण बातें और कहना चाहता हूँ । आज विश्वविद्यालय से शिक्षा पूर्ण करके आप के जीवन का एक अध्याय पूरा हुआ है। परन्तु वास्तव में ज्ञान प्राप्ति का कभी अंत नहीं होता। मनुष्य अंतिम समय तक कुछ न कुछ नया सीखने की अभिलाशा रखता है। यदि आपका परीक्षाफल आपकी अपेक्षाओं से कुछ कम भी रहा है तो आपको निराश होने की जरूरत नहीं है। अपनी कोशिशों के प्रति आशावान होकर और अधिक सफलता पाने का पुरुषार्थ करते रहना है। आइंस्टीन जैसे वैज्ञानिक अपने विद्यार्थी जीवन में सामान्य विद्यार्थी थे। यहां तक कि उन्हें विश्वविद्यालय में प्रवेश भी नहीं मिल पाया था, परन्तु अपनी मेहनत, लगन और आशावादिता से वह निरंतर अपनी प्रतिभा का विकास करते रहे और एक दिन वह उपलब्धि के ऊंचे शिखर पर पहुँचे।

udaan2016 december_Layout 1 19-01-2017 16:51 Page 5

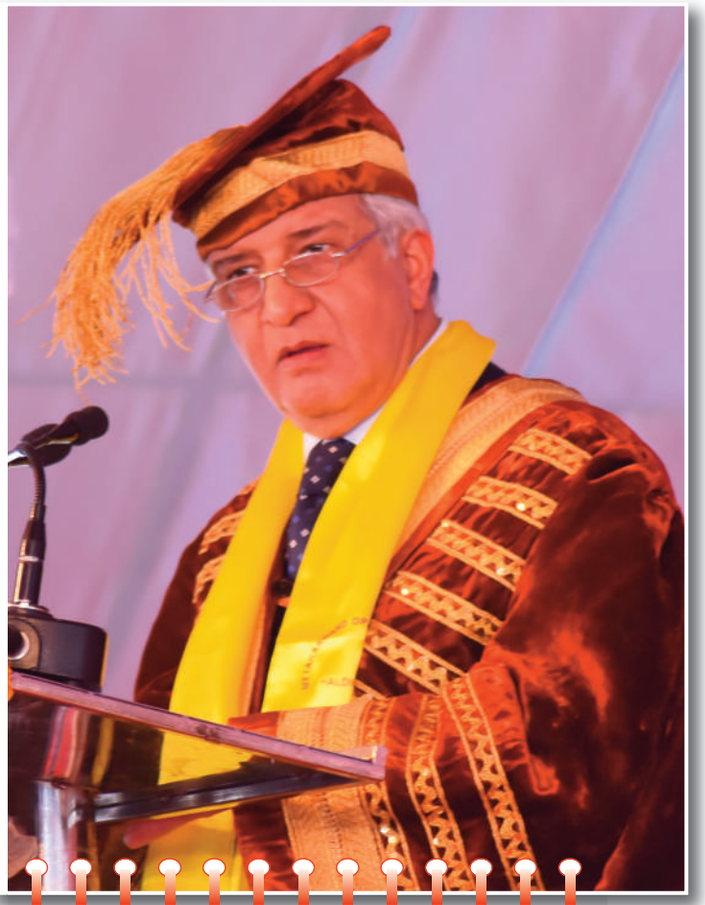

मैं समझता हूँ कि शिक्षा का सबसे बड़ा उद्देश्य है – मनुष्य को विवेकशील बनाना। विवेकशील होने का अर्थ है, सही और गलत के अन्तर को समझते हुए निर्णय करना। इसलिए शिक्षा में भी विवेकशीलता बढ़ानी होगी। सिर्फ नम्बरों की रेस में न पड़कर वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने पर जोर देना होगा। युवाओं में राष्ट्रीयता की भावना बढ़े, ऐसे प्रयास करने होंगे। साथ ही उनके भीतर उद्यम और परिश्रम के भाव भरने होंगे। ताकि वे सिर्फ नौकरी के पीछे न भागते फिरें। निश्चय ही कठोर श्रम के बिना कुछ भी सार्थक कर पाना संभव नही है। जो पुरुषार्थ करता है, भाग्य उसी का साथ देता है। बैंजामिन फ्रेंकलिन ने कहा है– कठोर परिश्रम ही सौभाग्य की जननी है।

आज की आर्थिक दौड़ में टैक्नोलॉजी ही सबसे सशक्त माध्यम है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी यानी आइसीटी के जरिये दूरस्थ शिक्षा को दिलचस्प और आसान बनाया जा सकता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मुक्त विश्वविद्यालयी शिक्षा समग्र और समन्वित शिक्षा की एक श्रेष्ठ पद्धति भी है। दुनिया के प्रख्यात मुक्त विश्वविद्यालयों ने यह साबित कर दिखाया है। ब्रिटिश ओपन यूनीवर्सिटी इसकी मिसाल है, जिसने उच्च शिक्षा के कई मानकों में ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों को भी पीछे छोड़ दिया है। फिर, हमारे देश के मुक्त विश्वविद्यालय क्यों उपेक्षित रहें।

दूरस्थ शिक्षा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके दरवाजे सबके लिए खुले रहते हैं। ज्यादातर पाठ्यक्रमों में अध्ययन के लिए कोई प्रवेश परीक्षा नहीं होती। यहाँ न उम्र का कोई बंधन है और न ही स्थान का। निर्धारित समय पर कक्षा में उपस्थित होने की बाध्यता भी नहीं है। इस तरह यह बहुत ही लचीली शिक्षण पद्धति है, जो छात्र केन्द्रित है।

यह शिक्षा पारंपरिक शिक्षा की तुलना में सस्ती है। इसमें न सिर्फ सहज–सरल अध्ययन सामग्री मिलती है, अपितु ऑडियो–विजुअल कंटेंट– यानी रेडियो और टेलीविजन के जरिये बेहतरीन शिक्षकों के व्याख्यान भी सुनने–देखने को मिलते हैं। एक ही समय में एक व्याख्यान को हजारों छात्र अपने घर में बैठकर सुन सकते हैं। अब तो ऐसी टेक्नोलॉजी आ गयी है कि हजारों किलोमीटर दूर बैठे छात्र, शिक्षक से सवाल–जवाब भी कर सकते हैं।

दुनिया के श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में चौबीसों घंटे शिक्षक और शिक्षार्थी ऑनलाइन जुड़े रहते हैं। भले ही शिक्षक और विद्यार्थी एक स्थान पर ना हों, लेकिन वे संचार के साधनों के माध्यम से निरंतर जुड़े रहते हैं और दोनों के बीच एक आत्मीय रिश्ता भी कायम हो जाता है।

udaan2016 december_Layout 1 19-01-2017 16:51 Page 6

उच्च शिक्षामंत्री डॉ. इंदिरा हृदयेश का संबोधन

किसी भी विश्वविद्यालय के लिए दीक्षांत समारोह का महत्व उसके अपने 'श्रम के निष्कर्ष'को देखने जैसा है । यह अपना 'मूल्यांकन'करने जैसा भी है। यह हमारे अपने 'कार्य' का परिणाम भी है । यह 'भविष्य' की दिशा का भी संकेत है। विद्यार्थी हमारे लिए भविष्य के बोधक हैं। दीक्षांत समारोह में प्राप्त उनकी सफलता उनके भविष्य के दृष्टि निर्माण की पीठिका बनेगी, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है। यह दीक्षित होने का अंत' (दीक्षांत) नहीं हैं, अपितु व्यावहारिक जीवन में प्रवेश का बिन्दु है। यही वह बिन्दु है, जिसके पश्चात् विद्यार्थी सामाजिक जीवन में प्रवेश करता है। एक प्रकार से इसके पश्चात् विद्यार्थी के ज्ञान की व्यावहारिक परख प्रारंभ होती है । आज के इस शुभ अवसर पर में उन समस्त विद्यार्थियों को बधाई देती हूं। मेरा मानना है कि

प्रमुख अंश

'प्राथमिक शिक्षा' विद्यार्थियों के भीतर 'संवेगात्मक ज्ञान' भरती है। माध्यमिक शिक्षा छात्र के भीतर सामाजिक कर्तव्य एवं व्यक्तित्व' विकास के बीज डालती है किन्तु उच्च शिक्षा किसी भी विद्यार्थी के भीतर 'गहरी अंतर्दृष्टि' पैदा करती है।' गहरी अंतर्दृष्टि'का अर्थ यह है कि यह आपको समाज की जटिलताओं की समझ, उसके अंतर्विरोधों का ज्ञान कराने के साथ–ही–साथ भविष्य के 'समाज का पाठ' भी तैयार करके देती है।

उच्च शिक्षा आपके भीतर 'विवेक भरने का स्पेस' देती है। अब तक प्राप्त ज्ञान, मूल्य, चरित्र, आचरण को किस प्रकार समाज में लागू करना है, यह आपके विवेक पर निर्भर करता है। एक ही शिक्षा ग्रहण करने की प्रतिभा एवं पद्धति से अलग–अलग अर्थ ग्रहण किये जा सकते हैं । उच्च शिक्षा 'सामाजिक शोध' के कुछ निष्कर्ष आपके हाथ में थमा देती है और यहीं से आपकी यात्रा प्रारंभ होती है। 'उच्च – शिक्षा' का अर्थ केवल यह नहीं है कि यह 'उच्च– डिग्री' प्राप्त करने का एक माध्यम है...उच्च शिक्षा का वास्तविक अर्थ इसकी उस व्यंजना में है, जिसके अनुसार यह समाज के भविष्य का ड्राफ्ट हमारे सामने प्रस्तुत करती है।

हमारे संवेग किस काम के हैं, यदि उनमें अंतर्दृष्टि न हों। हमारे भाव, संवेग, प्रेम, करूणा, मूल्य, चेतना, व्यक्तित्व जब वैचारिक अंतर्दृष्टि को प्राप्त कर लेते हैं, तो हमें समझना चाहिए कि हमने 'उच्च– शिक्षा' प्राप्त कर ली है । मेरी समझ से उच्च शिक्षा का वास्तविक अर्थ यही है ।

udaan2016 december_Layout 1 19-01-2017 16:51 Page 7

कुलपति प्रो. नागेश्वर राव का संबोधन

दीक्षांत समारोह विद्यार्थियों की औपचारिक शिक्षा की पूर्णता का उत्सव होता है। औपचारिक शिक्षा प्राप्त कर उसे व्यावहा. रिक जीवन में अपनाने का श्रीगणेश का दिन होता है, इसीलिए उसे दीक्षांत कहा जाता है। इस दिन छात्रों को जीवन के उच्च मूल्यों और आदर्शों से अवगत कराया जाता है ताकि व्यावहारिक जीवन में वे उन्हें अपनाएं, इसीलिए इस पर्व का किसी भी विद्यार्थी के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है।

दीक्षांत समारोह किसी भी छात्र के जीवन का सबसे अविस्मरणीय क्षण होता है, लेकिन मेरा मानना है कि यह अवसर हम शिक्षकों के लिए भी अत्यंत गौरव का होता है; क्योंकि इसी अवसर पर हमें अपने परिश्रम के प्रतिफल का प्रत्यक्ष दर्शन होता है, लेकिन हम सबके लिए यह गौरव इसलिए भी है क्योंकि यह हमारा प्रथम दीक्षांत समारोह है।

प्रमुख अंश

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय ने अपने छोटे–से जीवन में काफी प्रगति की है। पिछले दस वर्षों में जहां इसकी छात्र–संख्या पैंतीस हजार के पार पहुँच गयी है, वहीं इसके शैक्षणिक स्तर में लगातार सुधार हुआ है। आज विश्वविद्यालय की 13 विद्याशाखाओं के अंतर्गत कुल 77 पाठ्यक्रम चल रहे हैं। इनमें बीए, बीएससी और बीकॉम जैसे पारंपरिक पाठ्यक्रम तो हैं ही, प्रबंध अध्ययन, होटल मैनेजमेंट, पर्यटन, पत्रकारिता, समाज कार्य, आपदा प्रबंधन, ज्योग्राफिकल इनफार्मेशन सिस्टम, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा जैसे व्यावसायिक और रोजगारपरक पाठ्यक्रम भी हैं, जो नए जमाने की जरूरतों को ध्यान में रख कर तैयार किये गए हैं। इन विषयों में स्नातकोत्तर, पीजी डिप्लोमा, स्नातक, डिप्लोमा और प्रमाण–पत्र दिए जाते हैं। साथ ही स्थानीय युवाओं को रोजगार देने के उद्देश्य से उद्योग–जगत की मदद से कौशल विकास से सम्बंधित कार्यक्रम भी चलाये गए हैं। मारुती उद्योग, टाटा मोटर्स, टीवीएस, अशोक लीलैंड जैसे अनेक कंपनियों के साथ विश्वविद्यालय ने करार किये हैं, जिनके तहत छात्रों को मासिक स्टाइपेंड भी मिलता है और व्यावहारिक ज्ञान से संपन्न पढाई भी होती है। वर्ष 2010 से अब तक कुल छः हजार दो सौ चौंतीस छात्रों को कुल 28 करोड़ 62 लाख रुपये स्टाइपेंड के रूप में उक्त कंपनियों से मिल चुके हैं। आठ क्षेत्रीय केन्द्रों और 237 अध्ययन केन्द्रों के जरिये विश्वविद्यालय ने प्रदेश भर में अपनी उप. स्थिति दर्ज की है। प्रदेश का शायद ही कोई क्षेत्र हो, जहां हमारी पहुँच ना हो।

udaan2016 december_Layout 1 19-01-2017 16:52 Page 8

udaan2016 december_Layout 1 19-01-2017 16:52 Page 9

कैमरे की नजर में दीक्षांत

udaan2016 december_Layout 1 19-01-2017 16:52 Page 10

कैमरे की नजर में दीक्षांत

udaan2016 december_Layout 1 19-01-2017 16:53 Page 11

कैमरे की नजर में दीक्षांत

udaan2016 december_Layout 1 19-01-2017 16:53 Page 12

विश्वविद्यालय के स्वर्ण पदक विजेता 2015

स्नातकोत्तर

अफ़शा खान
एमबीए
74.14%

अजीत सिंह तोमर
एमएसडबल्यू
73.06%

आकांक्षा श्रीवास्तव
अंग्रेजी
82.89%

अनीता पंडा
मनोविज्ञान
80.10%

कु. ममता शर्मा
हिन्दी
75.22%

नेहा चौधरी
अर्थशास्त्र
78.56%

पूजा
राजनीति विज्ञान
76.33%

प्रभाकर खटैत
एमबीए
71.23%

प्राची शर्मा
एम. कॉम
76.22%

प्रतिभा जोशी
इतिहास
78.22%

udaan2016 december_Layout 1 19-01-2017 16:53 Page 13

रश्मि उपाध्याय
वनस्पति विज्ञान
77.50%

शगुफ्ता परवीन
शिक्षाशास्त्र
82.22%

श्रद्धांजलि
संस्कृत
80.22%

उर्वी कौशिक
योग
79.42%

विनोद कुमार
समाजशास्त्र
77.67%

विजेन्द्र सिंह
रसायन विज्ञान
78.25%

विक्रम रावत
भौतिक विज्ञान
76.17%

स्वर्ण पदक विजेता

स्नातक

कु. परिमुक्ता
बीए
78.80%

मोनिका
बी. कॉम
74.80%

पंकज महर
बी.एच.एम.
73.71%

समाचार पत्रों में दीक्षांत

मेधावियों पर हुई सोने की बारिश

उत्तराखंड मुक्त विवि के दीक्षांत समारोह में कुलाधिपति ने किया सम्मानित

शिक्षा एक अंतहीन यात्रा, जारी रखें पढ़ना

उच्च शिक्षा में जोड़ें हर्ब

यूओयू के टॉपर

जनपक्ष आज

छात्रों में अच्छे संस्कार जरूरी : डॉ. पाल

अमर उजाला

मुक्त विवि का दीक्षांत आज, राज्यपाल पहुंचे

हल्द्वानी। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह सोमवार को आयोजित होगा। दीक्षांत समारोह में राज्यपाल एवं कुलाधिपति छात्र- छात्राओं को उपाधियां देंगे। जिलाधिकारी दीपक रावत के मुताबिक ... एफटीआई हेलीपैड हल्द्वानी में उतरेंगे। 10:55 बजे से उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय समारोह में प्रतिभाग करेंगे। राज्यपाल 12:55 ... देहरादून के लिए रवाना होंगे। ब्यूरो

उत्तर उजाला

शिक्षा को रोजगार से जोड़ना जरूरी

पाठ्यक्रमों में समय के साथ बदलाव जरूरी

स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले छात्र

साथ आये सीएम व मंत्री

छह लोगों ने रिटायरमेंट के बाद पाई डिग्री

हिन्दुस्तान

युवा

आज का दिन 1927 में भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी का कराची में जन्म हुआ।

उत्तराखंड मुक्त विवि का पहला दीक्षांत समारोह, 2014 और 2015 में परीक्षा पास करने वाले सम्मानित

13 को मिला गोल्ड मेडल, 520 को डिग्री

मेधावी विद्यार्थी

दीक्षांत समारोह

दूरस्थ शिक्षा में कॉलेज नहीं होना बड़ी समस्या

ग्रामीण छात्रों की महिलाओं उठाएं लाभ

'एक कमरे से शुरू विवि ने बदली जिंदगी'

अमर उजाला

तीन चौथाई स्नातकों की शिक्षा रोजगारपरक नहीं

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत समारोह में राज्यपाल ने टॉपरों को दिया स्वर्ण पदक

रात में पढ़ाई कर पूरी की एमएससी

डिस्टेंस एजुकेशन महिलाओं के लिए अच्छी

गोल्ड मेडल मिलना रहा सरप्राइज

उच्च शिक्षा में दाखिले लेने वालों का ग्रास एनरोलमेंट रेशियो (जीईआर) अन्य देशों की तुलना में कम

इन्हें मिला गोल्ड मेडल

बुजुर्ग विद्यार्थी गदगद

पति की प्रेरणा से प्राप्त की उच्च शिक्षा

अमर उजाला — यूओयू में दीक्षांत समारोह की तैयारियां पूरी

दैनिक जागरण

यू ट्यूब पर छाएगा विवि का दीक्षांत समारोह

udaan2016 december_Layout 1 19-01-2017 16:53 Page 15

उत्तराखण्ड की पहली आइटी अकादमी का शिलान्यास

राज्य में पहली आइटी अकादमी का शिलान्यास गुरूवार को उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी में किया गया। शिलान्यास राज्य की उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. इन्दिरा हृदयेश तथा देश के जाने–माने अंतराष्ट्रीय मामलों के जानकार प्रो. पुष्पेश पंत ने किया। अकादमी का शिलान्यास करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. इन्दिरा हृदयेश ने कहा कि आईटी अकादमी उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय को देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों की श्रेणी में शामिल करेगी। उन्होंने कहा कि आइटी के क्षेत्र में भारत के युवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर परचम लहरा रहे हैं। उत्तराखण्ड के युवाओं के लिए यह अकादमी भविष्य की दशा–दिशा बदलने में कारगर होगी। उन्होंने कहा कि दुनिया के तकनीकी युग में उत्तराखण्ड पीछे न रह जाये इस उद्देश्य से इस अकादमी की स्थापना करना अनिवार्य था और आज हम इसके माध्यम से दूनिया के डिजिटल अभियान में शामिल हो गये हैं। विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रो. पुष्पेश पंत ने कहा कि यह आइटी अकादमी अमरत्व को प्राप्त होने वाली अकादमी होगी क्योंकि डिजिटल युग में कुछ भी समाप्त नहीं हो सकता। यह देश की ऐसी अकादमी होगी जिसमें डिजिटल कंटेन्ट्स, का भण्डार, प्रसार एवं विस्तार होगा। इससे राज्य की भौगोलिक परिस्थितियां एवं मानसिक दूरियां समाप्त होंगी। शिलान्यास कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर नागेश्वर राव ने कहा कि यह अकादमी सभी रोजगार प्राप्त तथा बेरोजगार युवाओं व शिक्षकों को डिजिटल इण्डिया से जोड़ने वाली अकादमी होगी, उन्होंने कहा कि राज्य में ही नहीं देश में भी उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय पहला मुक्त विश्वविद्यालय है जो डिजिटल के क्षेत्र में काफी आगे है। उन्होंने उच्च शिक्षा मंत्री व मुख्य अतिथि डॉ. इन्दिरा हृदयेश का आभार जताते हुए कहा कि उनकी संकलपना, परिश्रम और आशीर्वाद से ही आज इस अकादमी की स्थापना उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के

परिसर हल्द्वानी में हो होने के लिए यह अकादमी एक प्लेटफार्म का कार्य करेगी। इससे राज्य में डिजिटल एजूकेशन, डिजिटल इकानॉमी, डिजिटल सवांद को बढ़ावा मिलने के साथ–साथ अधिक से अधिक युवाओं को रोजगार भी प्राप्त होगा। अंत में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. आरसी मिश्र ने सभी अतिथियों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. राजेन्द्र कैडा ने किया। इस अवसर पर प्रो. गोविन्द सिंह, प्रो. एचपी शुक्ल, प्रो. गिरजा पाण्डेय, प्रो. पीडी पंत, डॉ. राकेश रयाल, वित्त नियंत्रक आभा गर्खाल आदि लोग मौजूद रहे।

पायी है। उन्होंने विश्वास दिलाते हुए कहा कि वे शिक्षा मंत्री की इस संकलपना पर खरे उतरेंगे और इस अकादमी को डिजिटल युग में एक पहचान दिलाने का कार्य करेंगें। आइटी अकादमी के रोडमैप तैयार करने वाले यूसर्क के निदेशक प्रो. दुर्गेश पंत ने अकादमी की पृष्ठभूमि और इसके उद्देश्यों पर प्रकाश डाला, उन्होंने कहा कि डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने में राज्य की यह बहुत बड़ी उपलब्धि है, उन्होंने कहा कि राज्य के विभिन्न शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों, कार्मिकों, तथा विद्यार्थियों के लिए डिजिटल दुनिया में शामिल

udaan2016 december_Layout 1 19-01-2017 16:53 Page 16

यूओयू ने मनाया 11वां स्थापना दिवस

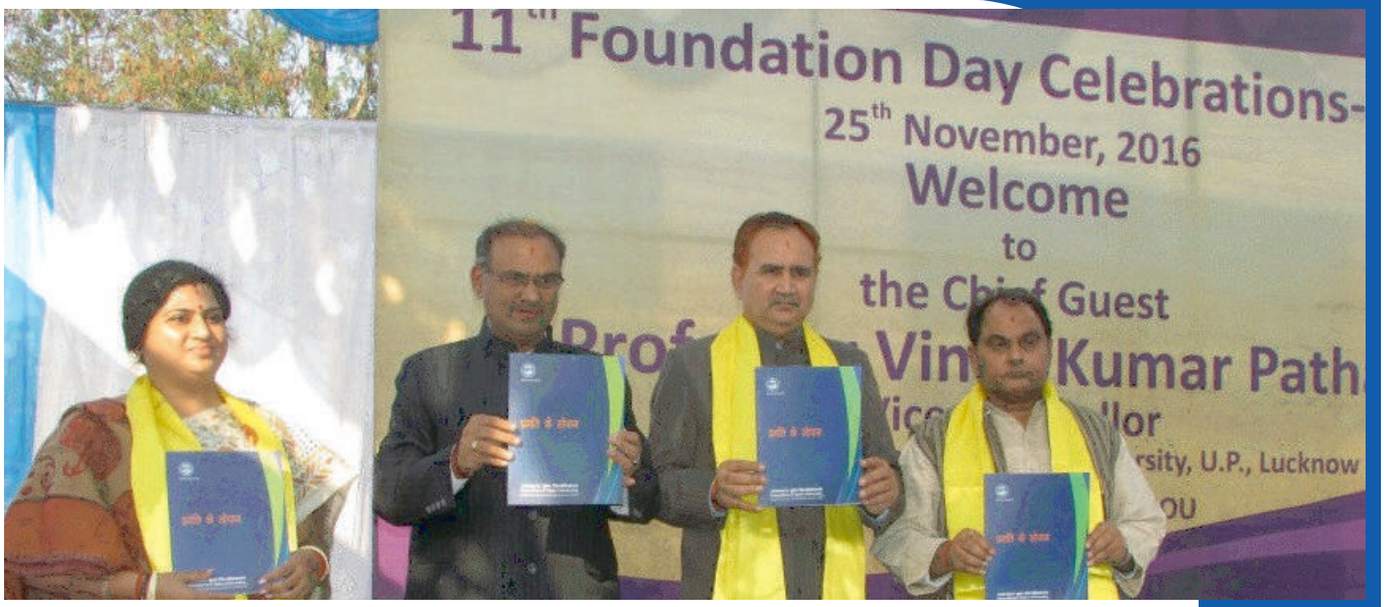

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय का 11वां स्थापना दिवस विश्वविद्यालय के मुख्यालय तीनपानी, हल्द्वानी में धूमधाम से मनाया गया। स्थापना दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय के 11 वर्षों के कार्यों तथा उपलब्धियों के सोपानों से सम्बन्धित एक स्मारिका का भी विमोचन किया गया। स्थापना दिवस कार्यक्रम में यूओयू के पूर्व एवं उत्तर प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नागेश्वर राव ने की। इस अवसर पर ''दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा से सशक्तिकरण'' विषय पर पोस्टर, कोलाज, स्लोगन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें विश्वविद्यालय के स्थानीय अध्ययन केन्द्रों के विद्यार्थियों ने तथा विश्वविद्यालय के सदस्यों ने प्रतिभाग किया, विजेताओं को अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया। अंत में एक संगीतमय कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया।

मुख्य अतिथि प्रोफेसर विनय कुमार पाठक ने कहा कि कोई भी संस्थान तब आगे बढता है जब उसके सदस्य, नेतृत्व के साथ एक होकर कदम से कदम मिलाकर कार्य करते हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय या कोई भी संस्थान एक परिवार की तरह होता है, उसके सदस्यों में मतभेद हो सकते हैं लेकिन मनभेद नहीं होने चाहिए, तभी संस्थान निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर होता है। उन्होंने कहा कि वे भले उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति हो लेकिन व

अ ा ज भी मन से विश्वविद्यालय से जुडे हैं और हमेशा विश्वविद्यालय को आगे ले जाने में उनसे जो भी सहयोग लिया जायेगा, तो वे देते रहेंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नागेश्वर राव ने कहा कि प्रो. पाठक ने अपने कार्यकाल में जो कार्य किये हैं, वे सराहनीय हैं और आज हम उन्हीं को आगे बढ़ा रहे हैं, प्रो. पाठक की विश्वविद्यालय को आईटी से जोड़ कर इसे सशक्त करने में अहम भ. ूमिका रही है, क्योंकि दूरस्थ शिक्षा में आईटी की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने कहा कि देश के अन्य मुक्त विश्वविद्यालयों तथा राज्य के विश्वविद्यालयों की तुलना में हम आईटी का अधिक प्रयोग कर रहे हैं जिसका लाभ हमारे विद्यार्थियों को मिल रहा है। उन्होंने स्थापना दिवस पर विश्वविद्यालय परिवार से आह्वान न किया है कि हमे इस स्थापना दिवस पर संकल्प लेना चाहिए कि हम अधिक से अधिक काम कर इस विश्वविद्यालय को राज्य का प्रथम विश्वविद्यालय बनाने में अपना योगदान दें। इस अवसर पर सभी प्राध्यापकों ने विश्वविद्यालय के 11 वर्षो के इतिहास पर चर्चा की और प्रगति पर प्रकाश डाला। कुलसचिव प्रो. आरसी मिश्र ने सभी अतिथियों का धन्यवाद किया। संचालन डॉ. राजेन्द्र कैड़ा ने किया।

कार्यक्रम में निदेशक प्रो. एचपी शुक्ल, प्रो. दुर्गेश पंत, प्रो. गोविन्द सिंह, प्रो. गिरिजा पाण्डेय, वित्त नियंत्रक आभा गर्खाल व संयोजक डॉ. मंजरी अग्रवाल सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं कर्मचारी थे।

स्थापना दिवस पर संकल्प लेना चाहिए कि हम अधिक से अधिक काम कर इस विश्वविद्यालय को राज्य का प्रथम विश्वविद्याय बनाने में अपना योगदान दें।

udaan2016 december_Layout 1 19-01-2017 16:53 Page 17

गीता जयंती पर व्याख्यानमाला

उत्तराखंड मुख्यत विश्वविद्यालय में सात दिसंबर 2016 को गीता जयंती के उपलक्ष्य में विशेष व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। व्याख्यान के मुख्य वक्ता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से आये प्रो विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र थे। प्रो मिश्र ने अपने व्याख्यान में गीता के सम्पूर्ण अध्यायों की विशद व्याख्या की। उन्होंने गीता के योग दर्शन पर विशेष प्रकाश डालते हुए गीता को योग की ओर उन्मुख करने वाला ग्रन्थ बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नागेश्वर राव ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति महोदय ने

गीता के दर्शन को जीवन में अपनाए जाने की आवश्यकता पर बल प्रदान किया। विचार गोष्ठी की प्रस्तावना मानविकी विद्याशाखा के निदेशक प्रो एच पी शुक्ला ने रखी । कार्यक्रम का संचालन डॉ देवेश कुमार मिश्रा ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के प्राध्यापक मौजूद रहे ।

पांच नये असिस्टेंट प्रोफेसरों ने किया कार्य भार ग्रहण

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में पांच नये असिस्टेंट प्रोफेसरों ने कार्य भार ग्रहण किया है। विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद की संस्तुति के बाद बीते दिनों ज्योतिष विषय में डा. नंदन कुमार तिवारी, रसायन विज्ञान में डा. शालनी सिंह, अर्थशास्त्र में शालिनी चौधरी, भूगोल में डा. अकरम रजा व मनो. विज्ञान में सीता रानी ने कार्यभार ग्रहण कर लिया है। सभी चयनित शिक्षकों को कुलपति प्रो. नागेश्वर राव, कुलसचिव प्रो. आरसी मिश्रा सहित सभी लोगों ने बधाइयां दी है।

विश्वविद्यालय में मनाया स्वच्छता पखवाड़ा

विश्वविद्यालय में 1 से 15 नवम्बर के बीच स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन किया गया ।इस दौरान विश्वविद्यालय में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये गए। क्षेत्र के विभिन्न कॉलेजों से आये बच्चों ने पर्यावरण एवं स्वच्छता की केंद्रीय थींम को लेकर आयोजित निबंध, पोस्टर प्रतियोगिता में भाग लिया। स्वच्छता पखवाड़े का समापन व्यापक स्तर पर सफ़ाई अभियान एवं विचार गोष्ठी के माध्यम से हुआ। गोष्ठी के मुख्य वक्ता प्रो गोबिंद सिंह थे। उन्होंने बाह्य स्वच्छता के साथ ही मन की स्वच्छता को भी अनिवार्य बताया। इस अवसर पर उपस्थित सभी लोगों को स्वच्छता को लेकर शपथ ग्रहण भी करायी गयी। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न प्रतियो. गिताएं में विजयी छात्रों को पुरस्कार वितरित किये गये। कार्यक्रम में निदेशक प्रो. एचपी शुक्ला, प्रो. आरसी मिश्र समेत सैकड़ों लोग मौजूद थे। संचालन डॉ शशांक शुक्ला ने किया। स्वच्छता पखवाड़े का संयोजन डॉ अखिलेश सिंह ने किया।

udaan2016 december_Layout 1 19-01-2017 16:53 Page 18

चट्टानों की संरचना के अध्ययन पर कार्यशाला

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में भारतीय भूगर्भ संरचना और टेक्टानिक अध्ययन समूह कोलकाता तथा उत्तराखंड विज्ञान एवं शैक्षिक शोध परिषद (यूसर्क) के सहयोग से चट्टानों की संरचना और उनके क्षरण की प्रक्रिया को समझाने के लिए तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें देश के जाने–माने भूविज्ञानियों ने पहाड़ की भूगर्भीय संरचना और हिमालय की संवेदनशीलता पर गहन अध्ययन किया। कार्यशाला में संयोजक प्रो. पीडी पंत ने कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में विस्तार से जानक. ारी दी। कार्यक्रम में कोलकाता से आये भूविज्ञानी प्रो. एन मंडल, के सांतनु बोस, आ. ईटीआई रूड़की के प्रो. एके जैन, बीएचयू के प्रो. हरिबहादुर श्रीवास्तव, दिल्ली से प्रो. अनुपम चटोपाध्याय, सुमित कुमार मित्रा आदि ने

भागीदारी की। इस दौरान भू वैज्ञानिकों ने अपने–अपने शोध पत्र भी प्रस्तुत किये।

दूरस्थ शिक्षण से जुड़ेंगे व्यक्तिगत परीक्षार्थी

उत्तराखंड सरकार ने एक महत्वपूर्ण फ़ैसला सुनाते हुए राज्य में प्राइवेट परीक्षा की समाप्ति की घोषणा कर दी। सरकार ने माना कि शिक्षा के दो ही माध्यम उचित हैं। शिक्षा का रेग्युलर मोड़ और दूरस्थ शिक्षा पद्धति। बहुत समय से शिक्षाविद् इस तथ्य पर बल दे रहे थे कि प्राइवेट परीक्षा ने सस्ती कुंजियों एवं गाइडों की छद्म वैचारिकता को बढ़ावा दिया है। सरकार के इस निर्णय से राज्य में अब शिक्षा के दो ही विकल्प बचे हैं। ऐसी स्थिति में जो छात्र प्राइवेट परीक्षा की ओर जाते थे, उनके लिए दूरस्थ शिक्षा पद्धति एक सुनहरा अवसर है। दूरस्थ शिक्षा पद्धति लचीली शिक्षा पद्धति है, जिसमें छात्रों को न सिर्फ़ गुणवत्तापरक शिक्षण सामग्री दी जाती है; अपितु परामर्श सत्र, कार्यशालाओं द्वारा विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा विषय की गहरी समझ भी प्रदान की जाती है।

साथ ही सत्रीय कार्यों द्वारा विद्यार्थी उच्च स्तर की पाठ्य सामग्री का अवलोकन सहज ही कर लेता है। ऐसी स्थिति में प्राइवेट परीक्षा की ओर अध्ययनरत उन्मुख शिक्षार्थियों के लिए यूओयू एक स्वर्णिम विकल्प है। राज्य में प्राइवेट परीक्षा को बंद करने की सूचना के बाद अब लोगों का रुख उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की ओर हो गया है। इधर प्राइवेट परीक्षा को लेकर मुक्त विश्वविद्यालय प्रशासन ने भी अपनी तैयारियां पूरी कर ली है।

तकनीकी आधारित शिक्षा पर कार्यशाला

ग्राफिक एरा पर्वतीय विश्वविद्यालय भीमताल में "Technology Enabled Education Programme" पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसका आयोजन उत्तराखंड विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान केंद्र देहरादून, कंप्यूटर विज्ञान विद्या शाखा, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय व स्पोकन टुटोरिअल, आइआइटी मुंबई की ओर से किया गया।

कार्यशाला का उद्घाटन चेयरमैन प्रो. दुर्गेश पंत, आईटीडीए के निदेशक, धर्मेन्द्र सिंह, ग्राफिक एरा पर्वतीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय जसोला व आईआईटी मुंबई से आये विशेषज्ञ द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया, आईआईटी मुंबई से आये विषय विशेषज्ञ द्वारा कार्यशाला में प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम में बोलते हुए प्रोफेसर दुर्गेश पंत ने कहा कि कार्यशाला में तकनीकी आधाररित शिक्षा को उत्तराखंड में इसे कैसे बड़ावा दिया जाय इस पर भी मंथन किया जाए, साथ ही इस विषय में रूप रेखा तैयार की जानी चाहिए। प्रो. दुर्गेश पंत ने Free and open&source software (FOSS) के बारे में भी जानकारी दी। आईटीडीए के निदेशक, धर्मेन्द्र सिंह ने कार्यशाला में Technology Enabled Education पर अपने विचार व्यक्त रखे। कार्यशाला में विभिन्न स्थानों से आये लोगों ने भी अपने–अपने विचार रखे। इस दौरान अनेक लोग मौजूद थे।

udaan2016 december_Layout 1 19-01-2017 16:53 Page 19

यूओयू में पत्रकारिता विभाग की कार्यशाला

आज के दौर की पत्रकारिता के लिए सत्ता का विपक्ष बनकर जनता के मुद्दों को उठाना ज़रूरी है, ऐसा ना करने पर पत्रकारिता के मूल्य और लोकतंत्र ख़तरे में पड़ जाएंगे। ये बात उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के पत्रकारिता और मीडिया अध्ययन विभाग की तरफ़ से आयोजित चार दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए वरिष्ठ पत्रकार और नैनीताल समाचार से संपादक राजीव लोचन साह ने कही। राजीव लोचन साह ने ये भी कहा कि उत्तराखंड में जनपक्षीय पत्रकारिता की एक लंबी परंपरा रही है और नई पीढ़ी के पत्रकारों को उस परंपरा की जानकारी होना ज़रूरी है। उन्होने उत्तराखंड में पत्रकारिता के इतिहास पर भी प्रकाश डाला। कार्यशाला में दैनिक जागरण के स्थानीय संपादक राघवेंद्र चढ्ढा ने छात्रों को समाचार कक्ष की संरचना और समाचार पत्र प्रकाशन की बारीक़ियां बताईं। वहीं वरिष्ठ पत्रकार आशुतोष उपाध्याय ने विज्ञान संचार पर, टेलीविजन पत्रकार गणेश रावत ने प्रसारण पत्रकारिता पर छात्रों से अपने अनुभव बांटे। कार्यशाला में प्रो. गिरजा पाण्डेय, अमर उजाला के संपादक संजय देव, ऑल इंडिया रेडियो रामपुर सुरेन्द्र राजेश्वरी, पंतनगर विश्वविद्यालय के शिवेन्द्र कश्यप, कुमाऊं विश्वविद्यालय के गिरीश रंजन तिवारी, वरिष्ठ पत्रकार तेजपाल सिंह नेगी, जगमोहन रौतेला ने व्याख्यान दिये। यूओयू के सहायक प्रोफेसर भूपेन सिंह ने संचार शोध पर व्याख्यान दिया व विभाग के अकादमिक परामर्शदाता राजेंद्र सिंह क्वीरा ने सत्रीय कार्य से संबंधित जानकारियां दी। इसी तरह देहरादून में भी यह कार्यशाला आयेजित की गयी।

यूओयू के स्वास्थ्य शिविर में बांटी निःशुल्क दवाई

उत्तराखंड मुक्तविश्वविद्यालय द्वारा सोमवार को तल्ली हल्द्वानी ग्राम सभा में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें पांच दर्जन से अधिक मरीजों का परीक्षण कर उन्हें दवा वितरित की गयी। विश्वविद्यालय के डा. हेमन्त काण्डपाल के नेतृत्व में आयोजित इस शिविर में विभिन्न रोगों से ग्रसित पांच दर्जन से अधिक लोगों ने अपना स्वाथ्य परीक्षण कराया। जिन्हें मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निःशुल्क दवाइयां भी दी गयी। शिविर में डा. प्रति बोरा ने भी सर्दियों में उचित खान–पान की जानकारी दी। कार्यक्रम में राकेश पंत व तल्ली हल्द्वानी के ग्राम प्रधान वंशीसिंह बिष्ट ने भी सहयोग प्रदान किया। उल्लेखनीय है कि महामहिम राज्यपाल के निर्देशों के क्रम में विश्वविद्यालय द्वारा क्षेत्र के पांच गांव गोद लिये गये है, जिनमें समय–समय पर स्वास्थ्य शिविर लगाये जाते है। इसके अलावा भी इन गांवों के लोगों को विश्वविद्यालय में पढ़ाई के लिए विशेष छूट दी जा रही है।

udaan2016 december_Layout 1 19-01-2017 16:53 Page 20

यूओयू में कैश–लेस प्रणाली के बताये लाभ

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के निर्देशानुसार सभी विश्वविद्यालयों को वित्तीय साक्षरता अभियान चलाने के तहत उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में 21 दिसम्बर को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें भारतीय स्टेट बैंक हल्दवानी से आये प्रतिनिधियों ने विश्वविद्यालय कर्मियों को कैश–लेस सिस्टम के बारे में जानकारी दी। इसके अलावा विश्वविद्यालय के शुल्क मैनेजमैंट के बारे भी जानकारी दी गयी, कि कैसे कैश–लेस प्रणाली से कार्य किया जाए। कार्यक्रम में एसबीआई कुसुमखेड़ा से आये सीनियर प्रबंधक मानस रॉय व एसपी त्रिवेदी ने बताया कि ई–वॉलेट के प्रयोग से आसानी से खरीददारी की जा सकती है, साथ ही यह काफी सुरक्षित भी है। उन्होने बताया कि प्रधानमंत्री की कैश–लेस योजना से लोगों को काफी राहत मिल रही है। इस दौरान विश्वविद्यालय के स्टडी सेंटरों में स्वाइप मशीन से पेमेंट प्रणाली शुरू करने व ई–कलेक्शन लागू करने पर भी चर्चा की गयी। कार्यक्रम का संचालन आईसीटी विभाग के प्रभारी प्रदीप पाठक ने किया। कार्यशाला में कुलपति प्रो. नागेश्वर राव, कुलसचिव प्रो. आरसी मिश्रा, वित्त नियंत्रक आभा गरखाल सहित मुक्त विश्वविद्यालय के शिक्षक व कर्मचारी मौजूद थे।

यूओयू में प्रवेश प्रक्रिया जनवरी से शुरू

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में शीत कालीन सत्र के लिए प्रवेश प्रक्रिया एक जनवरी से शुरू हो गयी है। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए यह प्रक्रिया विश्वविद्यालय के वेबसाइट ई–प्रोस्पैक्टस् (विवरणिका) व प्रिंट दोनों में जारी की गयी है। उल्लेखनीय है कि पहले प्रवेश कि यह प्रकिया वर्ष में एक बार होती थी। लेकिन अब विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नागेश्वर राव ने विद्यार्थियों की समस्याओ को देखते हुए वर्ष में दो बार प्रवेश प्रक्रिया शुरू कराने का निर्णय लिया है। इसी के अनुसार इस बार एक जनवरी 2017 से यह प्रक्रिया शुरू हो गयी है। इस संबंध में विश्वविद्यालय के प्रवेश प्रभारी डा. एमएम जोशी के अनुसार स्नातक व स्नातकोत्तर के अलावा डिप्लोमा तथा सार्टिफिकेट कार्यक्रमों के सभी सेमेस्टरों में प्रवेश प्रारंभ किये जा रहे है। उन्होंने बताया कि यह प्रक्रिया एक जनवरी 2017 से 28 फरवरी तक बिना शुल्क के तथा 31 मार्च 2017 तक विलम्ब शुल्क के साथ चलेगी।